प्रातःक्लास 12-5-68 ओमशान्ति शिव बाबा को याद करो विश्व कावर्सा तो

ओमशान्ति। बच्चे यह समझ गये और कोई दुनिया में मनुष्य नहीं जानते। सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो कि यह सृष्टि रूपी ड्रामा है। यह बातें सिर्फ तुम बच्चे ही समझ सकते हो। दुनिया की तो बात ही छोड़ो। भारत की ही बात है। (बाप कहते हैं जब धर्म की ग्लानी होती है, मनुष्य दुःखी होते हैं, जब दुनिया पूरी होने को होती है तो बाप को आना पड़ता है नई दुनिया स्थापन करने लिए।) सिवाय बाप के और कोई कर न सके। अभी नई दुनिया के लिए तो है एक पवित्रता, दूसरा फिर नालेज भी है। आत्मा पवित्र बनने से ठिकाने लग जावेंगी। अभी अपवित्र होने कारण कोई भी जा नहीं सकते। तो दो बातें हैं मुख्य। एक है बाप की याद, जो तुम अभी सीख रहे हो। बाप ड्रील सीखा रहे हैं। कोई समय सभी का अटेन्शन जाता है कि हम बाप के बच्चे हैं। बाप को याद किया जाता है, टीचर से योग लगाया जाता है। फ्लाना टीचर हमको पढ़ाते हैं। तुम जानते हो वही टीचर हमारा बाप भी है। अभी पढ़ा रहे हैं। सुबह में बाप के रूप में योग लगाये रहे थे। बाप को याद करो। खेंचते थे। बाप में प्यार होता है वर्से का। टीचर में पढ़ाई के वर्से का प्यार होता है। जिसमानी प्यार नहीं। पढ़ाई का प्यार होता है। इसमें फिर रूहानी प्यार। यह दुनिया से बिलकुल न्यारी चीज़ है। यह भी बच्चों को याद रखना है यह पुरूषोत्तम संगम युग है। बीच का। वास्तव में सच्चा2 कुम्भ का मेला है यह। आत्माओं और परमात्मा का मेला एकही बार 5000 बाद लगता है। बाकी तो जो भी मनुष्य तीर्थयात्रा, गंगा स्नान आद करते हैं, वेद-शास्त्र आद पढ़ते हैं इन सभी का नाम है भक्ति। इनको ज्ञान नहीं कहा जा सकता। तुम समझते हो द्वापर से लेकर हम भक्ति में थे। भक्ति को भी बाप ने समझाया है। पहले2 है अव्यभिचारी भक्ति। एक ही होती है। जैसे अभी तुम्हारा एक के साथ ही योग लगता है। वैसे पहले एक की ही भक्ति होती थी। यह तो सभी के बुधि में होगा। चक्र के राज़ को तो अच्छी रीत समझ गये हैं। भक्ति को भी समझ लिया। भक्ति और ज्ञान बिलकुल अलग है। बाप आते ही हैं ज्ञान देने। भक्ति के लिए बाप को नहीं आना पड़ता है। भक्ति तो अनेक प्रकार की होती है। एक भक्त की मत न मिले दूसरे से। कहां भी जावेंगे सभी की अलग2 मत। सुनाने वालों की भी अलग2 मत। तो अनेक प्रकार की भक्ति है। अनेक मतें हैं। कितने यज्ञ तप दान पुण्य सन्ध्या गायत्री आद2 तुम भक्ति मार्ग में करते थे। भक्ति को जन्म जन्मान्तर चलना ही है। कब से चली आई है यह भी तुमको ज्ञान मिला है। तो स्मृति में रहना चाहिए। अभी यह तो पक्का निश्चय हो गया भक्ति अभी खत्म होती है। अभी बाप आये हैं ज्ञान से नई दुनिया स्थापन करने। तुम यहां आते हो बाप से वर्सा लेने। नई दुनिया का वर्सा था। जो बच्चों ने पूरा किया। भक्ति भी पूरी की। अभी फिर ज्ञान सुन रहे हो। पतित से पावन जरूर बनना है। बाप पर फिदा होना है। बाप बिगर दूसरा कोई बात ही नहीं। अभी से मिलने की तो बात है नहीं। मिलने की चीज़ है नहीं। यह जिसमानी बात तो है नहीं। यह है रूहानी बातें। तुम सभी बच्चियां चाहती हो शिव बाबा से मिलें। मां बाप को तो भाकी चाहिए। अभी उन जिसमानी मां बाप को तो भाकी मिलती है मां बाप का नेपाज लेते हैं। अभी यह तो है रूहानी बात। रूहानी बाप है ना। रूहानी मां नहीं होती। रूहानी एक ही बाप। चित्र में भी सभी एक दो को अंगुली से ईशारा करते हैं कि एक को याद करो।

एक ही पतित पावन है। तुमको पावन कैसे बनाते हैं याद से। तुम जानते हो हम बाबा की याद में खड़े हैं। बाबा का लव जिसमानी बाप से अति ऊंच है। उन में कशिश है तुम बच्चे भी बुधि को पाते रहते हो। कशिश से आते रहेंगे। बाप चकमक तो एवर प्युर है ना। पवित्र चीज़ अपवित्र को अपने तरफ खेंचती है। देवतायें पवित्र तो सभी को खेंचते हैं ना। कहां भी जाओ पवित्र की महिमा होती है। देवताओं की भी महिमा गाते हैं। भागवत आद में उन्हों की महिमा है। वेद उपनिषद गीता आद यह सभी हैं भक्ति मार्ग की सामग्री। यहां तुम आते ही हो रूहानी सुनने। यहां शास्त्रों आद की बात नहीं। तुम्हारे पास कोई पुस्तक थी नहीं। कर के नमूने लिए रखे होंगे। किसको दिखाने लिए। इन में जैसे लिखा हुआ है। यहां तो भक्ति मार्ग की बात ही नहीं।

समझाने के लिए चित्र आद भी रखा है। तो सिद्ध हो गीता का भगवान कृष्ण नहीं था। यह बात है अभी बड़ी। पहले2 तो यह भारत वासियों को यह समझाना है। शास्त्र सभी खण्डन किये हुये हैं। किसने खण्डन किया? रावण सम्प्रदाय ने। एक मनुष्य ने यह शास्त्र आदपुस्तक सभी बनाये हैं। भक्ति मार्ग के लिए। एक बाप फिर ज्ञानसुनाते हैं। कहते हैं मैं इन सभी शास्त्रों को भक्ति मार्ग को जानता हूं। मैं पढ़ा हुआ कुछ भी नहीं हूं। मैं पढ़कर कोई सर्टीफिकेट आदनहीं लेता हूं। तुम सर्टीफिकेट ले सकते हो। नम्बरवारपुरुषार्थ अनुसार। बच्चे समझते हैं भगवानुवाच: है तो सही ना। मैं तुमको राजयोग सिखाता हूं। आगे भी बाप ने ऐसा कहा होगा। जैसे अभी कहते हैं। हे बच्चों मैं तुमको राजयोग सिखाये रहा हूं। तुम थे। फिर तुम ने ऐसे ही भिन्न2 नाम रूप में 84 जन्म लेते तुम ने राजभाग गवां दिया है। तुम ही यह थे। भारत खाली होता है ना। तुम ही भारत में थे। तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। सारे विश्व में राज्य में हमराज्य करते थे। बहुतसुख था। पहले नम्बर में श्रीकृष्ण था। कितना उनको याद करते हैं। अच्छा आखीरन में कृष्ण फिर आवेगा या आवेगा ही नहीं। बाप समझाते हैं कृष्ण भी गोरा था। फिर 84 जन्म लेते2 सांवराबना है। सिर्फ एककृष्ण तो नहीं। सारी उनकी राजधानी थी। अर्जुन प्रिन्स था। तो राजाई थी ना। अभी वह खलास हो गये हैं। अभी फिर से तुम बनते हो। इस समय तो भारत में ढेर राजाएं हैं। विलायत में भी है। भारत में था ही राजाओं का राज्य। डायरेक्टरी में लिस्ट होती है सारी। फलाना महाराजा फलाने देश का। इतनी जागीर है। सब लिखा हुआ होता है। कोई को 10लाख कोई को 5लाख। कम से कम लाख जरूर होती है। फिर नम्बरवार। जिसको लाख देते हैं तो उन से 20 लाख पैदाईश होंगी। पैसे के लिए ही माथा मारते हैं ना। सभी व्यापार आदपैसे के लिए करते हैं। पैसे बिगरतो काम चल न सके। अभी तुम जानते हो बाबा के पास पैसे ही बात ही नहीं। वहां जितने सोने हीरों के महल होंगे वह फिर कहां भी न होंगे। सभी चीज़ कमती ही होती जाती है। सोने की ईंटों के महल बनाते थे। बच्चियां ध्यान में जाती हैं सोने की ईंटें देखती हैं। कहां देखते हैं? वैकुण्ठ में। सूक्ष्मवतन में नहीं। सूक्ष्म वतन में तो ईंटें होती ही नहीं। तुम वैकुण्ठ में जाते हो वहां सोने के महल आद देखते हो। यहां तो कुछ भी है नहीं। वहां सोने की ही बनते रहते होंगे। यहां भी मकान बनाने लिए ईंटें मिलते रहते हैं मंगाते रहते हैं। वहां भी तो मकान आद बनते हैं ना। सोने के महल बनते हैं। सोमनाथ का मंदिर है ना। अजमेर भी सोनी द्वारिका दिखाते हैं। माडल बना हुआ है। सोने का पानी चढ़ा दिया है। उस समय सोना सस्ता भी था। तुम्हारी तो फिर भी देहली ही रहती है। देहली को परिस्तान कहा जाता है। अभी तो कब्रस्तान है। देहली में एक मंदिर लगा हुआ है 5000वर्ष पहले धर्मराज ने परिस्तानस्थापन किया था। गीता का अक्षर लिखा हुआ है। अभी वह बोर्ड है वा नहीं बाबा को मालूम नहीं है। बिरला के पास तो पैसे बहुत हैं। जिनको बहुत पैसे होते हैं वह मंदिर बनाते हैं। समझते हैं यह लक्ष्मी की आशीर्वाद है। लक्ष्मी कहां से लावेगी। जरूर नारायण चाहिए ना। महालक्ष्मी की पूजा करते हैं परन्तु वह पैसे कहां से लावेगी। महालक्ष्मी को चार भुजा वाला बनाते हैं। जरूर दो भुजा उनके पति की होंगी। वह तो समझते हैं हम लक्ष्मी को पूजते हैं। नारायण तो याद भी नहीं होगा। यह नहीं समझते कि लक्ष्मी को चार भुजा कैसे होंगी। जरूर दो उनके होंगे। जैसे रावण को दस सिर दिखाते हैं स्त्री के और पुरुष के। तो एक एक के दो भुजाएं बनावेंगे। यह बातें पूजाकरने वाले नहीं जानते। कितनी पूजा होती है। करोड़ों के अन्दाज में हो जाते हैं। महाल0 कहते हैं परन्तु है ल0ना0 दोनों। मंदिर भी बनाते हैं नर ना0 का। उन में भी चार भुजाएं देते हैं। अनेकानेक मंदिर है। चित्र किसम2 के बनाते हैं। पाण्डवों का भी कितने बड़े2 चित्र दिखाते हैं। हाथी जितने बड़े मनुष्य। नामरूप दिया है पाण्डव। वहां द्रौपदी भी देखेंगे। निशानियां हैं परन्तु कुछ जानते नहीं। बम्बई में एलीफेन्टा ग्रुप मंदिर में होंगे पाण्डव के चित्र। अभी तो तुम बच्चों को यह देखने करने का शौक नहीं है। तुम बच्चों को टाईम वेस्ट नहीं करना है। इन देखने करने में। तुमको तो हावी रहनी चाहिए सर्विस की। शौक होता है

नहीं। कोई को घूमने का, कोई को घोड़-दौड़ का कोई को किस का। अभी तुम बच्चों को सभी हिरस छोड़नी है। घूमना-फिरना अमरनाथ जाना, कुछ भी देखने दिल नहीं होगी। सिवाय बाप को याद करने और कुछ नहीं बुधि में आवेगा। बाप को और चक्र कोयाद करना है। बस। और कोई हिरस नहीं। बाहर में किसको देखेंगे बन्दर-बन्दिरियां हैं जंगल में नाच करते रहते हैं। वहां क्या रखा है। तो समझदार तीखे बच्चे हैं वह समझते हैं यह तो सभी विनाश हो जाना है। हम क्यादेखें। हमारे स्वर्ग के आगे तो यह तुच्छ है। हम तो चलते, फिरते बाप को याद करें। बाप से बुधि योग तोड़ कर कोई चीज में न लगावें। इतनी मेहनत करनी है अगर यह बनना है तो। बाप इनके लिए भी कहते हैं। जो खुद बनते हैं तो बाप कहेंगे बच्चे भी हमको फलो करें। परन्तु इतनी ताकत कहां। बाप के साथ सफाई सच्चाई भी चाहिए। सच्चे दिल पर साहब राजी कहते हैं ना। सच्चे दिलसे जो बाप को याद करते हैं वह उनके डायरेक्शन पर चलते हैं। यहां तो जैसे तुम बैंक में बैठे हो। अविनाशी बैंक में तुम्हारा जमा होता है। यहां तुम बिलकुल सेफ्टी में हो। सदैव तो कोई बैठ न सके। यहां बाप डायरेक्ट बैठ ड्रील सिखलाते हैं। सभी जगह तो ऐसे नहीं हो सकता। सर्वव्यापी तो नहीं है ना। मधुबन में है। कहेंगे मधुबन में है। दिन प्रति दिन जोर दिया जाता है। ड्रील सिखलाते हैं क्यों किबच्चे याद में कमज़ोर हैं। इसलिए बिठाया जाता है। सभी बच्चे सुनते हैं बाबा यहां बैठाते हैं तो सवेरे उठ कर बैठते हैं। करेन्ट तो फिर भी सम्मुख मिलती है। जोभी बच्चे बैठते होंगे उनका बुधि योग मधुबन में होगा। शिव बाबाको याद करनेसे ब्रहमा भी याद आता होगा। क्यों कि इन में शिव बाबा बैठा है। उनको याद करना है। शिव बाबा बैठा होगा मधुबन में मुरली चलाता होगा। सभी को ऐसे भासेगा। जिनका बुधि योग होगा।। जानते हैं इनके रथ में इनके बाजु में शिव बाबा बैठे होंगे। इनके साथ ड्रील सिखलाते होंगे। यह डबली सोने की नहीं है। यह तो लोहे की थी। इनमें बैठते2 यह भी डबलीसोने की हो जावेगी। हीरे जैसे बनजावेंगे। हीरे जैसा जन्म तो हीरे ही देंगे ना। हीरा कौन है? इस रथ में बैठे हैं। तो बच्चों का बुधि योग यहां हो जावेगा। इस रथ में बाबा बैठा है। वह मुरली सुनाते हैं। उन्हों ने ही सभी राज़ बताये हैं। पतित-पावन भी वह बाप ही है। कहते हैं बच्चे मुझे यादकरो मामेकं। वह एक बाप यहां सिखला रहे हैं। सभी का बुधि योग मधुबन में होगा। इस रथ मेंविराजमान शिव बाबाको याद करना है। वह तो मधुबन में बैठे हैं ना। उनको अनेक प्रकार के पुर्जे होंगे। तुमको यहां बाहर की पुर्जे कम होंगी। इस लिए तुम यहां ड्रील2 आते हो रिफ्रेश होने लिए। फिर पक्के हो जाते हैं। मधुबन में मुरली बजे यह भी गाया हुआ है। आगे थोड़े ही बातें समझते थे। आगे तो वृन्दावन जाते थे। आगे तो वहां क्या था छोटी सी मूर्ति रखी थी। अभी तो बहुत बड़ामंदिर बनाया है। क्यों कि बहुत जाते हैं। तो बाप बैठ कर सभी बातें समझाते हैं। सृष्टि का समाचार। तुम भक्ति मार्ग में क्या2 करते थे। सतयुग में क्या2 करेंगे। कितने वहां सुख मिलते हैं। यहां तुम आते ही हो सम्मुख पढ़ने। यहां तुमको धारणा अच्छी होगी। वहां इतनी नहीं होगी। बच्चे याद आते रहेंगे। बच्चों में बहुत लव होता है। बच्चों को छोड़ कर आते होंगेतो फिर फिक्र होता होगा। पता नहीं बच्चों को सम्भाल करते हैं या नहीं। अपनी चीज़ याद जरूर पड़ती है। यहां तो बाप कहते हैं अपने शरीर को भी याद न करो। आपे मरे तो मर गईदुनिया। हम बाप के बन गये हमारे लिए सारी दुनिया मर गई। यह सारी दुनिया कब्रदाखिल होनी है। यहकुछ भी होगा ही नहीं। बाबा ने ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है। अभी हम अपने शान्तिधाम को याद करते हैं। जिसको वानप्रस्त निर्वाणधाम कहते हैं। बाप कहते हैंतुमसभी की अभी वानप्रस्त अवस्था है। बाप हमको शान्तिधाम ले जाते हैं। फिर सुखधाम में आवेंगे पढ़ाई के ताकत से। बाबा साथ नहीं देगा। न कोई बाबा भेज देगा। यह तो बना बनाया ड्रामा है। अभी पुरानी दुनिया की आयु पूरी होती है। फिरनई दुनिया शुरू होगी। वहां जाकर सभी कुछ नया बनाना पड़ेगा। नया कोई सभी कुछ तैयार थोड़े ही रखा होगा। यह तोतुम अभी पढ़ते होदेवता पद पाने लिए। इसलिए नईदुनिया नया महल चाहिए।

खानियां सभी तुमको नहीं मिलती है। दुनिया ही नई बन जाती है। यह चक्र फिरता रहता है। तुम ही शाहुकार बनते हो। फिर गरीब। शाहुकार तो जरूर बनेंगे ना। नहीं तो पढ़ाई किस काम की। तुम जानते हो हम विश्व के मालिक बनते हैं। गोल्डेन एज से आयरन एज, आयरन एज से गोल्डेन एज। यह एक ही सृष्टि चक्र है। जो तुमको याद करना है। दैवी गुण भी धारण करनी है। किसको दुःख नहीं देना है। बहुत मीठा बनना है। टाईम लगता है। यह तो ठीक है। सेकण्ड में जीवन मुक्ति। तुम सभी स्वर्ग में आते हो ना। फिर है पढ़ाई पर। कोई तो भूल जाते हैं। इसलिए बच्चे आते हैं बल्ड से भी लिख कर देते हैं। ए एग्रेमेन्ट। कि हम अपनी शादी बरबादी नहीं करेंगे। आज भी एक बच्चा खून से लिख कर आया। बाबा कहते हैं अभी तो खुशी में हो परन्तु खबरदार रहना। हमारे पास बहुतों की एग्रीमेन्ट रखी है, आज वह नहीं हैं। ऐसे न हो तुम भी न रहो। बोला नहीं बाबा। ऐसा कब नहीं होगा। याद रहता है हमने बेहद के बाप से प्रतिज्ञा की है। विल किया था। कमसे कम वानप्रस्त अवस्था में विल तो कर दो। पिछाड़ी में बहुत दुःख लड़ाईयां मारा मारी होनी हैं। अपस में लड़ते रहते हैं। पैसे ही बरबाद करते हैं। कोई तो घुट के खाते हैं किसके नाम विल करें। बच्चे तो अच्छे नहीं हैं। फिर बच्ची को स्त्री को देखेंगे। विल किसको दें। बाप ने समझाया है इस समय विल करते हैं पापात्मा पापात्माओं को। यह पापात्माओं की दुनिया है। वह है पुण्यात्माओं की दुनिया। वहां तो होती है एक बच्चा और एक बच्ची। वह भी योगबल से। कितनी फर्स्ट क्लास शोभ होती है नेचरल। यहां तो शरीर को अच्छा बनाने लिए कितनी ब्युटी करते हैं। वहां तो नेचरल ब्युटी रहती है। इनको अननेचरल कहा जाता है। वहां सभी नेचरल है। प्रकृति ही नई है ना। सभी चाहते हैं हम ऐसे गोरे बनें। आजकल तो तुम देखते हो इस दुनिया का क्या हाल है। अभी तुम बच्चे जानते हो बाबा आया हुआ है हमको हीरे जैसा बनाने। देवताओं की महिमा बहुत भारी है। नालेज से ऐसे बनते हैं। बाप को भी सर्विस एबुल बच्चे ही पसन्द आवेंगे। जो अच्छी रीत बाप को याद करते हैं। बाप के दिल पर तब चढ़े जब औरों को भी आप समान बनावे। जो दिल पर चढ़ते हैं वही तख्त पर बैठे। खून से तो लिखा शादी नहीं करेंगे परन्तु दैवी गुण भी धारण करनी है। नालेज धारण करनी है। औरों को आप समान बनाना है। अगर राजाई पानी है तो। बहुत पुरुषार्थ करना है। अहमदाबाद में देखो सरला है कितने को आप समान बनाती है। बहुत सेवा करती है। जरूर उच्च पद पावेंगे। कोई तो कहेंगे उन से भी हम जास्ती सर्विस करेंगे। सर्विस करनी चाहिए ना। ऐसे नहीं यह बन्धन है। बाबा ने कई बन्धन खलास कर दिये हैं। बन्धन तो सभी को रहती ही हैं। छोटे2 बच्चे थे शादी किये हुये, जवान बच्चे भी थे। हम बाबा के बन गये बस दुनिया ही खत्म हो गई। सभी ऐसे माताओं के हवाले कर दिये। माताओं की कमिटि बनाई। अभी तुम सम्भालो। बच्चा कहे हमारा हिस्सा। दिल टूट जाती है। समझते हैं यह तो पवित्र नहीं बनते गोया हमारे कुल के नहीं। शुद्र कुल का है। बाप कहते हैं तुम हमारे कुल का नहीं हो। वह भी जानते हैं हम ब्राह्मण कुल के नहीं हैं। फिर कुछ न कुछ यज्ञ के लिए मदद करते हैं। सम्पूर्ण बनने में टाईम लगता है। कहा जाता है दे दान तो छूटे ग्रहण। सभी को देना होता है। जो भी है। तब ही ग्रहण छूटेगा। कुछ नहीं होगा तो सभी कुछ मिलेगा। इसमें ठगी चल न सके। सिवाय एक बाप के और कोई याद न पड़े तब मदद भी ऐसे मिलती है। इसमें सहन भी करना पड़ता है। सहन करने बिगर कबकुछ मिलता नहीं। यह आंखें बहुत ही क्रिमिनल है। भाई बहिन में भी क्रिमिनल दृष्टि आ जाती है। तो बाबा फिर कड़ी आर्डीनेन्स निकालते हैं कि भाई2 समझो। बाप जो विश्व की राजाई देते हैं उनको बहुत2 प्यार से याद करना है। बस उनके गले लगे ही रहें। और सभी बात ही भूल जाये। मैं आत्मा हूं। यह बहुत प्रेक्टीस करनी है। एक बाप को याद करना है जिससे ही वर्सा मिलना है। हम आत्मा शरीर से पार्ट बजाने आई हैं। अभी हमको घर जाना है। फिर इस छी छी दुनिया में नहीं आना है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुड मार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते --नमस्ते।

-: : ओमशान्ति : : -